हम सबके राम

संपादक
डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

हम सब के राम

सम्पादक
डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

समकालीन प्रकाशन
समकालीन प्रकाशन
नई दिल्ली-110002

सर्वाधिकार सुरक्षित

लेखक व प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी अंश, किसी भी रूप में या किसी भी प्रकार से इलेक्ट्रॉनिक, मशीनी या फ़ोटोकॉपी या रिकॉर्डिंग द्वारा प्रतिलिपित या प्रेषित नहीं किया जा सकता।

आईएसबीएन : 978-93-92356-68-1

प्रकाशक : **समकालीन प्रकाशन**
फ्लैट नं. 02, प्रथम तल, अंसारी मार्केट,
दरियागंज, नई दिल्ली-110002
ई-मेल : sales.samkaleenprakashan@gmail.com
दूरभाष : 7827484578

संस्करण : प्रथम संस्करण, 2024
आवरण : अमित
सर्वाधिकार : © डॉ. सुरेन्द्र शर्मा
मूल्य : एक हज़ार आठ रुपये मात्र
मुद्रक : आरना इंटरप्राइजेज, गाज़ियाबाद

Ham Sab Ke Ram
Edited By: Dr. Surendra Sharma

Rs. 1008/-

अनुक्रमणिका

दो शब्द 7
-डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

1. राम तुम मानव हो? ईश्वर नहीं हो क्या? 17
-प्रोफेसर रामनाथ मेहता

2. सत्य, न्याय एवं निष्ठा के आदर्श और उत्कृष्ट मानवता के संवाहक : मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम 23
-डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

3. भारतीय जीवन-मूल्यों का अनुपम कोश : 'श्रीरामचरितमानस' 34
-डॉ. शकुंतला कालरा

4. श्रीराम के लिए भी युद्ध अनिवार्य हुआ 42
-प्रोफेसर रामनाथ मेहता

5. भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप और रामकाव्यधारा 48
-डॉ. धनंजय कुमार

6. कामिल बुल्के की दृष्टि में 'मानस' के राम 63
-डॉ. राजेन्द्र कुमार सिंघवी

7. 'रामो विग्रहवान् धर्मः' 71
-डॉ. दिनेश शर्मा

8. श्रीरामचरितमानस में सामाजिक परिवेश एवं आदर्श चरित्रों का वर्णन 79
-डॉ. मोहित मिश्रा

9. सगुण भक्ति का सूत्रधार : राम काव्य 87
-डॉ. राजन तनवर

10. अयोध्या : नामकरण, श्रीरामावतरण से वर्तमान श्रीराममंदिर प्राण-प्रतिष्ठा तक 91
-आचार्य सुरेश शर्मा भारद्वाज

11. भारतीय जनमानस और समाज में श्रीराम एक आदर्श 103
-डॉ. सुनीता

12. 'राम की शक्ति पूजा' में राम की मानवीय सम्वेदना 109
-डॉ. रीना डोगरा

13. देवभूमि हिमाचल के लोक गीतों में श्रीराम 117
-डॉ. रविंद्र सिंह

14. श्रीराम के आदर्श स्वरूप और सनातन जीवन-मूल्यों का सशक्त दस्तावेज : श्रीरामचरितमानस 127
-डॉ. सुमन देवी

15. वर्तमान युग के परिप्रेक्ष्य में श्रीराम के आदर्शों की प्रासंगिकता 137
-डॉ. कीर्ति चौधरी

16. श्रीरामचरितमानस में वर्णित सांगीतिक वाद्य : एक अध्ययन 142
-डॉ. हेमराज

17. प्रभु राम का आगमन : सब में एक, एक में सब 153
-प्रो. शेख अकील अहमद

18. आदर्श व्यक्तित्व और मर्यादा के प्रतीक : श्रीराम 160
-डॉ. आरती

19. हिमाचल प्रदेश के लोकगीतों में श्रीराम 167
-डॉ. लतेश कुमारी

20. राम से भगवान राम तक 174
-डॉ. रोहित कुमार

21. श्रीराम के जीवन चरित का प्रामाणिक आदिग्रन्थ : रामायण 181
-डॉ. शिखा सिंह

22. मिथिला के राम 202
-डॉ. रवि झा

23. हिमाचल की राममय लोक संस्कृति 212
-उमा ठाकुर

24. मराठी 'गीत रामायण' में व्यक्त राम कथाएँ 220
-डॉ. सुप्रिया प्रभाकर जोशी

25. 'अवधी की राम काव्य परम्परा' 248
-डॉ. रेखा श्रीवास्तव

26. आधुनिक इतिहासकारों के दृष्टिकोण में रामायण और उसके प्रमुख पात्रों का वैदिक संबंध 257
-डॉ. निलीमा
-डॉ. नीरज कुमार चतुर्वेदी

27. मानवीय जीवन के आदर्श : मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम 263
-श्रद्धा भट्ट

28. मानवता के लिए प्रेरणा और आदर्श : प्रभु श्रीराम 271
-अंजना ठाकुर

29. पापियों के संहारक भगवान श्रीराम 279
-वन्दना शुक्ला

30. रामायणकालीन वैज्ञानिक जीवन शैली 290
-डॉ. कमलेन्द्र कुमार

श्रीरामचरितमानस में सामाजिक परिवेश एवं आदर्श चरित्रों का वर्णन

-डॉ. मोहित मिश्रा
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी विभाग)
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादबाद

भक्तियुग भारत के लिए स्वर्ण युग रहा है, इस काल खंड में रचित ग्रंथ का महत्त्व व्यापक स्तर पर हुआ है। तुलसीदास, केशवदास, कबीर आदि ने साहित्य के माध्यम से एक संदेश दिया जिससे समाज को सर्वश्रेष्ठ बनाया जा सके। इस का एक महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर तुलसीदास है। इनकी रचनाएँ सभी काल खंड एवं देश काल परिस्थितियों में उपयोगी है। महान व कालजयी साहित्य वही होता है जो सभी परिस्थियों में अपने प्रतिमान एवं पत्रों के द्वारा समाज का मार्गदर्शन करने में सक्षम हो। तुलसीदास की रचना 'श्रीरामचरितमानस' का अस्तित्व साहित्य समाज के साथ साथ सामान्य व्यक्ति के जीवन में प्रयोग होने वाले संदेश देता है। साहित्य समाज को एक मार्ग दिखाता है जिसके कारण उसको समाज का दर्पण कहते है। साहित्यकार समाज से सम्बन्धित तथ्य अपनी रचना में लिपिबद्ध करता है क्योंकि वह भी सामाजिक प्राणी है। तुलसीदास ने सामाजिक मूल्यों को महत्त्व प्रदान किया है साथ ही उनकी रचना का प्रत्येक पात्र समाज में एक आदर्श प्रस्तुत करता है जिससे विशिष्ट समाज का निर्माण किया जा सके। 'श्रीरामचरितमानस' एक धार्मिक ग्रंथ ही नहीं है बल्कि उसके पत्रों के द्वारा समाज को आदर्श निर्देश देने का कार्य करता है। 'श्रीरामचरितमानस' के माध्यम से सामाजिक परिस्थितियों का वर्णन प्रस्तुत किया गया है, जिसमें मनुष्य को एक आदर्श पुरुष से परिचित कराया है। भारतीय सनातन परंपरा का मार्गदर्शन

समाज को सरल भाषा में किया है। 'श्रीरामचरितमानस' में प्रत्येक व्यक्ति के लिए लोकमंगल की कामना का वर्णन है। ऐसे ग्रन्थ की आवश्यकता प्रत्येक काल में है। नि:सन्देह मध्ययुगीन भक्तिकाल की सन्त काव्यधारा साहित्य के मूल्यपरक दृष्टिकोण को पूर्णत: आत्मसात करती है। साथ ही साथ साहित्य जगत के मार्ग से लोक कल्याण भावना का बखूबी निर्वहन करती है। साहित्य और सामाजिक मूल्य का सम्बन्ध शाश्वत है।

जीवन के प्रारंभ से ही मनुष्य अपने लिए सुविधाओं का निर्माण करता रहा है जिसने जीवन को नए मार्ग दिखाए जिससे जीवन सरल और सुलभ हुआ जीवन यापन हेतु उसे सत्यं शिवम् सुन्दरम् को मानना पडता है। मनुष्य ने एक दूसरे के प्रति दया, ज्ञान-विज्ञान से युक्त दृष्टि आचार-विचार एवं आदर्श चरित्र का समवेत रूप क्षमा, मृदुता तथा सरलता का भाव अपनाया है। सत्यं शिवम् सुन्दरम् युक्त इस ग्रन्थ की वर्तमान परिपेक्ष्य में आवश्यकता होती है। मानस ऐसा ग्रन्थ है, जो सम्पूर्ण व्यावहारिक जीवन दर्शन को समेटे हुये है। इसमें सांसारिक जीवन के व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन के विभिन्न अंगो के लिये आदर्श प्रस्तुत किया है। भारतीय मनीषियों के अनुसार सभी मूल्यों को धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष चार कसौटियों में विभाजित किया गया है। धर्म और शिक्षा का सम्बन्ध ऐतिहासिक है। आदि काल से ही धर्म ने शिक्षा को प्रभवित किया है धर्म मूल्य का निर्धारण करता है, शिक्षा उस पर अमल करती है धर्म शिक्षा की पहली सीढ़ी है तो शिक्षा दूसरी सीढ़ी। धार्मिक विचारों में परिवर्तन होने से शिक्षा के रूप में भी परिवर्तन होने लगता है। एक अध्यापक भी धर्म से युक्त होता है और होना भी चाहिए क्योंकि धर्म से विमुख व्यक्ति कट्टर स्वभाव का होता है और ऐसे अध्यापन द्वारा अध्यापक कार्य तो सम्भव हो सकता है किन्तु बालक रूचि लें यह असम्भव है। आध्यात्मिक व्यक्ति मृदु स्वभाव का होता है, साथ ही सहनशील, धैर्यशील, विवेकी, संयमी, वस्तु निष्ठ दृष्टिकोण वाला तथा शीलवान होता है ऐसे शिक्षक का सम्पूर्ण व्यवहार आचरण लचीला और प्रेम युक्त होता है। बालकों को

उनके लक्ष्य की ओर उन्मुख करता है। 'श्रीरामचरितमानस' धार्मिक ग्रन्थ होने के साथ साथ लोकहित कारी है। समन्वयकारी ग्रन्थ होने के कारण मानस की प्रासांगिकता आज भी बनी हुई है।

श्रीरामचरितमानस में सामाजिक समरसता विद्यमान है। मानस में ऊँच-नीच के भेदभाव को मिटाने का भरसक प्रयास किया गया है प्रेमवश शबरी के झूठे बेरों का खाना उसका प्रमाण है। इस सन्दर्भ में हम निषादराज का उदाहरण ले सकते है। जब भरत राम को अयोध्या लौटाने के लिये चित्रकूट जाते है तब उनकी भेंट निषादराज से होती है तब भरत के द्वारा उनका नाम पूछा जाने पर वे कहते है:-

देखि दूरी ते कहि निज नामू

(अर्थात् मैं नीची जाति का हूँ)

यह सुनकर भी भरत रथ से उतरकर बडे प्रेम से उसकी ओर जाते हैं यह प्रतिक्रिया समरसता का प्रमाण देती है।

"राम सखा सुनि स्यंदन त्यागा
चले उतरि उमनत अनुरागा।
करत निषाद दंडवत पाई प्रेमहि
भरत लीन्ह उर लाई
भेंटत भरत ताहि आति प्रीती
लेग सिहाहि प्रेम कइ रीती।"

मानस के कुछ प्रसंगो से इस बात की पुष्टि होती है। वास्तविता के आधार पर यदि विचार किया जाये तो यह तथ्य सत्य है कि प्रेम जाति पाँति ऊँच-नीच आदि को भुला देता है। आज के वातावरण को यदि ध्यान से देखें तो कितना दुख: होता है लोग मजदूरी करने वाले, सफाई करने वाले, सब्जी बेचने वाले, गैस सिलेण्डर बाँटने वाले को हीन भावना से देखते हैं। इसी कारण हमें अपने अर्न्तमन को झकझोरने की आवश्यकता है इस विषय में समाज सुधारकों ने निरन्तर चिन्तन किया है।

श्रीरामचन्द्रजी को सरयू पार कर चित्रकूट पहुँचना था तो केवट को साथ लिये बिना वे कैसे वहाँ पहुँचते। उनके लिये लंका पहुँचना कोई कठिन कार्य नहीं था। परन्तु लंका जाने के लिये सेतु बाँधने के लिये अपने चौदह वर्ष के वनवास के समय उन्होने वानरों को साथी भी बनाया तथा शबरी को माता कौशल्या से कम न समझा। सामाजिक विभिन्नता होने पर भी उस समय अच्छे कार्य हुये हैं और उस विविधता में एकता स्थापित की है। वानर समाज का सहयोग इस बात का प्रमाण है। जनजाति समाज हो अथवा कोई दूसरा सब मे समरसता प्रतीत होती है। हमारे देश में इस विविधता को दूर करना बड़ा ही दुष्कर कार्य है। हमारे देश में जो विद्यटन के तत्व जोर पकड़ रहे है वह सामाजिक विभिन्नता के कारण ही गम्भीर रूप धारण करते जा रहे हैं। समाज एक संकीर्ण दृष्टिकोण से भरा हुआ है, वह केवल लाभ की ओर देख रहा है। उसको यह चिन्ता नहीं कि उसकी धरणाओं से देश को लाभ होगा या हानि। प्रत्येक सामाजिक समूह बन्द सन्दूक की भाँति अपने को दूसरे के सामाजिक समूह से अलग रखने का प्रयत्न करता है दूसरों के दृष्टिकोण को समझने की चेष्टा नहीं करता। इस समय आवश्यकता इस बात की है कि विभिन्न समाजों में एक दूसरे से मिलने जुलने की भावना उत्पन्न की जाये और उन्हें समाज के प्रति प्रेम के साथ-साथ इस बात की ओर कार्य करने को कहा जाये कि राष्ट्र का कल्याण हो। 'श्रीरामचरितमानस' एक कारगार ग्रन्थ है जिससे सामाजिक समरसता की शिक्षा प्राप्त की जा सकती है।

श्रीरामचरितमानस राजनीतिक एकता के लिये भी विख्यात है। राजगद्दी के लिये कोई भाई व्याकुल नहीं है। राम पिता की आज्ञा के पालन हेतु राजसिंहासन का परित्याग कर वन को चले जाते हैं। कैकेयी के चाहने पर भी भरत राजा का पद ग्रहण नहीं करते बल्कि राम को लौटाने अयोध्या से वन को निकल पड़ते हैं। पीछे-पीछे सभी सम्बन्धी व सामाजिक सदस्य चल पड़ते हैं। उसमें कोई सन्देह नहीं कि भारत भर में पूज्य स्थान फैले हुये हैं जहाँ जाकर कहीं का भी व्यक्ति तृप्ति प्राप्त करता है उत्तर से उत्तरी सीमा तक रहने वाला भारत का निवासी भारत

के दक्षिण के अन्तिम छोर रामेश्वरम को श्रद्धा की दृष्टि से देखता है और इसे अपना अहोभाग्य समझता है यदि उसको वहाँ जाने का अवसर मिले। अयोध्या राम जन्म भूमि है एक पवित्र स्थली है तथा पुण्य भूमि मानी जाती है राजनीतिक दृष्टिकोण से देखें तो आज भी एकता के दर्शन होते है। इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि भारतवासी राज्य के बन्धनों में न बँधकर सारे भारत में आते-जाते रहे हैं। एक दूसरे के प्रति श्रद्धा रखते रहें है और आन्तरिक एकता के सूत्र में रहें हैं।

साहित्यकार समाज का पारखी होता है अतः साहित्य समाज का दर्पण है, इसीलिए साहित्यकार समाज की दिशा व दशा पर दृष्टि रखता है अपनी लेखनी के माध्यम से समाज के उत्थान में अपनी भूमिका निभाता है। गोस्वामी तुलसीदास ने मानस के माध्यम से तत्कालीन समाज को इस सामुदायिक विभाजन से होने वाली हानि से उभारने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। बालकाण्ड में वर्णित मुनि समागम में ऋषि भारद्वाज कहते हैं कि हर कोई भगवान शंकर राम की महिमा का बखान करते हैं:-

"संतत जपत संभु अविनाशी।
शिव भगवान ज्ञान गुनरासी॥
सोऽपि राम महिमा मुनिराया।
शिव उपदेश कीन्ह करि दाया॥"

राम नाम का प्रभाव तो सभी युगों सभी शास्त्रों में मिलता है। तुलसीदास के अनुसार राम नाम वह साधन है जिससे सभी सिद्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। केवल इतना ही नहीं जब तक जीव अपनी जिव्हा से राम नाम नहीं जपता तब तक वह दैहिक, दैविक और भौतिक तापों से जलता रहेगा। इसी कारण राम नाम का भरोसा छोड़ जो कोई और भरोसा करता है। वह ऐसा ही है जो परोसे भोजन को छोड़कर घर-घर फिरता हो। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने इस बात पर ध्यान दिया था कि "शताब्दियों पर शताब्दियाँ बीत गई, लेकिन रामायण, महाभारत का स्त्रोत तनिक भी नहीं सूखा है। प्रतिदिन गाँव-गाँव घर-घर पंसारी की

दुकान से लेकर राजा के महल तक राम नाम पर एक सी श्रद्धा है, क्योंकि यह श्रद्धा की ही नहीं व्यवहार बुद्धि की बात भी है।" महाकवि निराला ने लिखा है-

"राम के हुये तो बने काम
संवरे सारे धन, धान-धाम।"

वर्तमान बुद्धिजीवियों के इस सन्देह को सम्बोधित करते हुये ही निराला वही जोड़ते हैं-

पूछा जग ने, वह राम कौन?
बोली विशुद्धि जो रही मौन।
वह जिसके दून न ड्योढ़ पौन,
जो वेदों में है सत्य साम।।

आज का मनुष्य सम्पूर्ण मान भूलकर केवल वस्तुयें बटोरने में लगा हुआ है, और भोग विलास को ही शिक्षा व जीवन का लक्ष्य मान बैठा है। तभी वह राम नाम की महिमा को 'फेथ' की श्रेणी में डाल कर इधर उधर भटक रहा है, जबकि राम हृदय में स्थित है। भारतीय संविधान की धारा-19 में यह बात स्पष्ट कर दी गयी है कि "सभी व्यक्ति अपनी इच्छानुसार किसी धर्म का अनुसरण कर सकते हैं। यहाँ के नागरिकों को इस बात की स्वतन्त्रता प्रदान की गयी है कि वे किसी भी धर्म को मानने तथा उसके आचरण करने के लिये स्वतन्त्र हैं।"

भारतीय दर्शन में धर्म के दस लक्ष्ण बताये गये हैं-

धृतिःक्षमा दमोस्तेयं शौचमिन्द्रयनिग्रहः।
धी विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

यदि धर्म को शिक्षा से अलग कर दिया जायेगा तो मानव के अन्दर से भय स्वतः ही हट जायेगा। ऐसी स्थिति में मानव को दानव बनने में तनिक भी देरी नहीं लगेगी तब देश में भ्रष्टाचार चोरी, मार-काट, असत्य भाषण तथा कट्टरता सर्वत्र व्याप्त हो जायेगी। अतः ऐसी स्थिति से बचने के लिये धर्म व संसार को कल्याण मार्ग पर प्रशस्त करने वाले

ग्रन्थ की महती आवश्यकता है। जीवन का प्रत्येक कार्य किसी न किसी मूल्य से सम्बन्धित होता है। कोई भी शिशु बचपन से ही मूल्य शिक्षा ग्रहण करता है मूल्य का आशय गुणशीलता से है इसे उचित, उत्तम के सन्दर्भ में भी समझा जा सकता है दरिद्र की सहायता करना उत्तम कार्य है किन्तु कपड़े की खरीद के सम्बन्ध मे निर्णय लेना उचित की श्रेणी में आता है। 'श्रीरामचरितमानस' के द्वारा प्रस्तुत आदर्श के द्वारा एक विशिष्ट समाज का निर्माण किया जा सकता है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि तुलसीदासकृत 'श्रीरामचरितमानस' ने भारतीय सनातन धर्म को एक आदर्श पात्र के द्वारा संपूर्ण विश्व में सामाजिक व्यवस्था के निर्माण का मार्ग दिखाया है। भारतीय संस्कार विश्व को शांति और बंधुत्व की शिक्षा देता है। राम ने समाज को संगठित होकर न्याय के मार्ग पर चलने का मार्ग दिखाते है। उन्होंने परिवार के सभी संबंधों को निर्वाह करने का संदेश दिया है। भरत के त्याग ने भाई के प्रति निष्ठा का परिचय दिया है, सेवा, त्याग, निष्ठा एवं व्यवहार के अनेक संदेश प्रस्तुत किए है। यह ग्रंथ संपूर्ण विश्व के लिए प्रतीक है, जिसने राम जैसा मर्यादा पुरुषोत्तम चरित्र प्रस्तुत किया है। राम की त्यागशीलता, क्षमा, दया, पुत्रधर्म व युगधर्म आदि से हमें भी इन्हें अपनाने की शिक्षा मिलती है। यदि आज के युवाओं को इससे सम्बन्धित शिक्षा प्रदान की जाये तो वह दिन दूर नहीं जब रामराज्य जैसी स्थिति आ जायेगी। यह संदेश सभी तक जाना आवश्यक है जिससे इस पृथ्वी पर कोई दीन-हीन व दुखी नहीं रहेगा। कलह-कलेशों का सर्वथा अन्त हो जायेगा। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'श्रीरामचरितमानस' सर्वोत्तम ग्रन्थ है। इसमें सामाजिक एवं मानवीय मूल्य के साथ साथ आदर्श चरित्र का परिचय प्रस्तुत हुआ है। वर्तमान समय में इस ग्रंथ के पात्र और मूल्यों का प्रचार प्रसार होना आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीरामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास टीकाकार हनुमानदास पोद्दार गीता प्रसाद, गीता प्रेस गोरखपुर।

2. आधुनिकता और तुलसीदास, श्री भगवान सिंह भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

3. श्रीमती अनीता सिंह , (2011) स्वामी विवेकानन्द श्री अरविन्द रवीन्द्र नाथ टैगोर और गाँधी के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन एवं वर्तमान युग में उनके शैक्षिक विचारों की उपादेयता शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

4. गोस्वामी चिमनलाल (1972) "रामांक" कल्याण श्रीमद्भगवद्गीता, गीताप्रेस, गोरखपुर।

5. डॉ. एस. एस. माथुर (2013) श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-2

6. प्रेम नारायण पाण्डे, एजूकेशन एण्ड सोशल मोबिलिटी, 1988